ग्रीन ऑडिट एवं कैम्पस पर तीन दिवसीय कार्यशाला का समापन

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

बीकानेर. राजकीय डूंगर महाविद्यालय में बीआईआरसी व आईक्यूएसी के संयुक्त तत्वावधान में ग्रीन आडिट एवं ग्रीन कैम्पस विषय पर तीन दिवसीय कार्यशाला का समापन हुआ।

इस दौरान प्राचार्य डॉ. जीपी सिंह, उपाचार्य डॉ. इन्द्रसिंह राजपुरोहित, डॉ.. सुरूचि गुप्ता, डॉ. हेमेन्द्र भंडारी के सानिध्य में पांच विद्यार्थियों ने विषय पर प्रस्तावना प्रस्तुत की। 16 विभागों से नांमाकित 75 में से 40 चयनित विद्यार्थियों को पांच समूहों का अम्बेसडर विद्यार्थी नियुक्त किया गया, जिन्होंने जल संरक्षण व मैनेजमेन्ट, ऊर्जा प्रबन्धन, वेस्ट मैनेजमेन्ट, फौना-फ्लोरा एवं बायोडायवर्सिटी, कार्बन फुटप्रिन्ट एवं कैमिकल विषयों पर कार्य शुरू किया।

कार्यशाला के अन्तिम दिन परीक्षा एवं ग्रीन मूल्यांकन विषय पर विशेष व्याख्यान परिचर्चा सत्र एव समूह विश्लेषण कार्यक्रम आयोजित किया। डॉ. नरेन्द्र भोजक ने वर्तमान शिक्षा प्रणाली एवं एनईपी 2020 के अंतर एवं समानता को रेखांकित करते हुए एससमेन्ट एवं इवेल्यूशन में अंतर स्पष्ट किया।

ग्रीन कैम्पस सिद्धान्तों के अनुसार गुणवत्तायुक्त शिक्षा को उत्तम एससमेन्ट के आधार पर ही प्रसारित किया जा सकता है। ग्रीन एससमेन्ट की विधि को शैक्षणिक प्रयोगशाला के माध्यम से स्थापित किया गया ।

डूंगर कॉलेज में ग्रीन ऑडिट एवं कैम्पस पर कार्यशाला आयोजित

बीकानेर, (कासं)। राजकीय डूंगर महाविद्यालय बीकानेर में बी.आई.आर.सी व आईक्यूएसी के संयुक्त तत्वावधान में ग्रीन आडिट एवं ग्रीन कैम्पस विषय पर तीन दिवसीय कार्यशाला के समापन सत्र में प्राचार्य डॉ. जी. पी. सिंह, उपाचार्य डॉ. इन्द्रसिंह राजपुरोहित व डॉ. सुरभि गुप्ता, डॉ. हेमेन्द्र भंडारी के सानिध्य में पांच विद्यार्थियों ने विषय पर प्रस्तावना की प्रस्तुति दी। जिसमें पानी का बचाव कर मरुस्थलीय क्षेत्र में जल संरक्षण के उपाय विकसित करने पर जोर दिया।

प्राचार्य डॉ. जी.पी. सिंह ने अपने उद्बोधन में विद्यार्थियों द्वारा तीन दिनों से किये जा रहे प्रयासों की सराहना करते हुए कैरियर पर ध्यान देने एवं निरंतर मेहनत करने पर बल दिया। उपाचार्य डॉ. इन्द्रसिंह राजपुरोहित विद्यार्थीयों के सर्वांगीण विकास हेतु ग्रीन आडिट एवं कैम्पस की आवश्यकता को उदाहरणों द्वारा समझाया।

16 विधानों से नांमाकित 75 में से 40 चयनित विद्यार्थियों को पांच समूहों के अम्बेसडर विद्यार्थी नियुक्त किया गया। जिन्होंने जल संरक्षण व मैनेजमेंट, ऊर्जा प्रबंधन, वेस्ट मैनेजमेंट, फौना-फ्लोरा एवं बायोडायवर्सिटी, कार्बन फुट प्रिन्ट एवं कैमिकल विषयों पर कार्य शुरू किया। साथ ही ग्रीन कैम्पस एवं एनईपी 2020 विषय पर आज कार्यशाला के अंतिम दिन शैक्षणिक परीक्षा एवं ग्रीन मूल्यांकन विषय पर विशेष व्याख्यान चरिचर्चा सत्र एवं समूह विश्लेषण कार्यक्रम आयोजित किया। डॉ. नरेन्द्र भोजक ने वर्तमान शिक्षा प्रणाली एवं एनईपी 2020 के अन्तर एवं समानता को रेखांकित करते हुए एससमेंट एवं इवेल्यूशन ने अंतर स्पष्ट किया। ग्रीन कैम्पस सिद्धांतों के अनुसार गुणवत्तायुक्त शिक्षा को उत्तम एसेसमेंट के आधार पर ही प्रसारित किया जा सकता है। आज की कार्यशाला में ग्रीन एसेसमेंट की विधि को शैक्षणिक प्रयोगशाला के माध्यम से स्थापित किया।

डूंगर कॉलेज में ग्रीन आडिट एवं कैम्पस पर आयोजित कार्यशाला के समापन समारोह को डॉ. नरेन्द्र भोजक ने संबोधित किया।

शैक्षणिक परीक्षा प्रयोग में चार गुणों के आधार पर मूल्यांकन किया गया प्रथम शिक्षक द्वारा सामान्य प्रश्न पत्र विधि, द्वितीय अभिभावकों द्वारा मूल्यांकन, तृतीय मित्रों व सहभागियों द्वारा मूल्यांकन एवं चतुर्थ स्व मूल्यांकन। इस मूल्यांकन को वास्तव में 40 विद्यार्थियों के लिए करवाया गया। इस मूल्यांकन को लागू करना अत्यन्त आवश्यक एवं मूल्यवान बताया। कल इसका विस्तृत परिणाम जारी किया जायेगा। शैक्षणिक प्रयोगशाला में ग्रीन ऑडिट एवं एनईपी 2020 के माध्यम से चतुष्फलकीय शैक्षणिक परीक्षा एवं ग्रीन मूल्यांकन का इतिहास रचा गया।

गौतिका, अनुपमा, लिपाक्षी सोनी, विशाल सरण, राखी सुथार, अवीन, नजमा, शोएब खान ने डॉ. रामाराम व डा. रवि परिहार के नेतृत्व में कॉलेज में संचालित वाटर पाईंट, कुएं, मोटर, स्टोरेज टैंक का अवलोकन कर 14 बिन्दुओं का प्रपत्र तैयार किया जिसमें प्रत्येक स्थान-विभाग में कितना पानी आता है, कितना उपयोग होता है, कितना वेस्ट हो जाता है। इसकी गणना करने पर यह ज्ञात किया जायेगा कि प्रतिदिन न्यूनतम कितने लीटर पानी की आवश्यकता होती है। पानी का बचाव कर मरुस्थलीय क्षेत्र में जल संरक्षण के उपाय विकसित किये जायेंगे। उषा वर्मा, यश सिंह, जयकिशन सोलंकी, सौरव शुक्ला, उषा चारण, मिथिका सोलंकी ने डॉ. अक्षय जोशी व डॉ.

- ऊर्जा स्रोत जैसे- बिजली, एलपीजी गैस, लकड़ी कोयला आदि के उपभोग पर आधारित 13 बिन्दुओं का प्रपत्र तैयार किया।

उमा राठौड़ के नेतृत्व में कॉलेज में विभिन्न प्रकार के ऊर्जा स्रोत जैसे- बिजली, एलपीजी गैस, लकड़ी कोयला आदि के उपभोग पर आधारित 13 बिन्दुओं का प्रपत्र तैयार किया। इसमें प्रतिदिन कक्षाओं में, प्रयोगशाला व ऑफिस में कितनी ऊर्जा की आवश्यकता है एवं इनसे से कितनी ऊर्जा रिन्युएबल स्रोत से प्राप्त हो सकती है। गणना कर ज्ञात की जायेगी जिससे ग्रीन एनर्जी का कॉलेज रोडमैप बनाया जा सकें।

सन्नी लाम्बा, गजेन्द्र नेहरा, देवेन्द्र सिंह हरसाना, शाखा पारीक, शशिकान्त प्रेमी, वेद प्रकाश पारीक, पवन नांगल ने डॉ. महेन्द्र थौरी व डॉ. मधु सुदन शर्मा के नेतृत्व में वेस्ट मैनेजमेन्ट के तीन आयामों सलिड वेस्ट, लिक्विड वेस्ट एवं गैसीय वैस्ट को ध्यान में रखकर कॉलेज की कैन्टीन, गार्डन, खेल मैदान, कक्षा सेमिनार हाल, प्रयोगशाला, ऑफिस पार्किंग जैसे स्थल चिन्हित किए जहां बायोवेस्ट ई-वेस्ट एवं हानिकारक वेस्ट को निकाल कर ग्रीन तकनीक से नष्ट या उपयोग करने के सुझाव बनाए जा रहे हैं।

चतुष्फ्लकीय शैक्षणिक परीक्षा एवं ग्रीन मूल्यांकन पर देश में प्रथम कार्यशाला

ग्रीन आडिट एवं कैम्पस पर तीन दिवसीय कार्यशाला का समापन

बीकानेर 27 फरवरी । राजकीय डूंगर महाविद्यालय, बीकानेर में बी.आई. आर.सी व आईक्यूएसी के संयुक्त तत्वाधान में ग्रीन आडिट एवं ग्रीन कैम्पस विषय पर तीन दिवसीय कार्यशाला के समापन सत्र में प्राचार्य डॉ. जी.पी. सिंह, उपाचार्य डॉ. इन्द्रसिंह राजपुरोहित, डा. सुरूचि गुप्ता व डॉ. हेमेन्द्र भंडारी के सानिध्य में पांच विद्यार्थीयों ने विषय पर प्रस्तावना की प्रस्तुति दी। प्राचार्य डॉ. जी.पी. सिंह ने अपने उद्बोधन में विद्यार्थीयों द्वारा तीन दिनों से किये जा रहे प्रयासों की सराहना करते हुए कैरिअर पर ध्यान देने एवं निरंतर मेहनत करने पर बल दिया। उपाचार्य डॉ. इन्द्रसिंह राजपुरोहित विद्यार्थीयों के सर्वागीण विकास हेतु ग्रीन आडिट एवं कैम्पस की आवश्यकता को उदाहरणो द्वारा समझाया। 16 विभागों से नांमाकित 75 में से 40 चयनित विद्यार्थियों को पांच समूहों के अम्बेसडर विद्यार्थी नियुक्त किया गया जिन्होने ने जल संरक्षण व मैनेजमेन्ट, ऊर्जा प्रबन्धन, वेस्ट मैनेजमेन्ट, फौना–फ्लोरा एवं बायोडायवर्सिटी, कार्बन फुटप्रिन्ट एवं कैमिकल विषयों पर कार्य शुरू किया। साथ ही ग्रीन कैम्पस एवं एनईपी 2020 विषय पर आज कार्यशाला के अन्तिम दिन चतुष्फ्लकीय शैक्षणिक परीक्षा एवं ग्रीन मूल्यांकन विषय पर विशेष व्याख्यान परिचर्चा सत्र एवं समूह विश्लेषण कार्यक्रम आयोजित किया। डॉ. नरेन्द्र भोजक ने वर्तमान शिक्षा प्रणाली एवं एनईपी 2020 के अन्तर एवं समानता को रेखांकित करते हुए एससमेन्ट एवं इवेल्यूशन ने अंतर स्पष्ट किया, ग्रीन कैम्पस सिद्वान्तों के अनुसार गुणवत्ता युक्त शिक्षा को उत्तम एससमेन्ट के आधार पर ही प्रसारित किया जा सकता है। आज की कार्यशाला में ग्रीन एससमेन्ट की विधि को शैक्षणिक प्रयोगशाला के माध्यम से स्थापित किया।

शैक्षणिक परीक्षा प्रयोग में चार गुणों के आधार पर मूल्यांकन किया गया प्रथम शिक्षक द्वारा सामान्य प्रश्न पत्र विधि, द्वितीय अभिभावकों द्वारा मूल्यांकन, तृतीय मित्रों व सहभागियों द्वारा मूल्यांकन एवं चतुर्थ स्वमूल्यांकन। इस मूल्यांकन को 40 विद्यार्थियों के लिए करवाया गया। विद्यार्थियों के समूहों ने इसमें उत्साहपूर्वक आनन्द के साथ भाग लिया एवं इस मूल्यांकन को लागू करना अत्यन्त आवश्यक एवं मूल्यवान बताया। कल इसका विस्तृत परिणाम जारी किया जायेगा। शैक्षणिक प्रयोगशाला में ग्रीन ऑडिट एवं एनईपी 2020 के माध्यम से चतुष्फ्लकीय शैक्षणिक परीक्षा एवं ग्रीन मूल्यांकन कर इतिहास रचा गया।

जल संरक्षण व मैनेजमेन्ट ग्रुप में गीतिका, अनुपमा, लिपाक्षी सोनी, विशाल सरण, राखी सुथार, अवीन, नजमा, शोएब खान ने डॉ. राजाराम व डा. रवि परिहार के नेतृत्व में कॉलेज में संधारित वाटर पाइन्ट, कुएं, मोटर, स्टोरेज टैंक का अवलोकन कर 14 बिन्दुओं का प्रपत्र तैयार किया जिसमें प्रत्येक स्थान/विभाग में कितना पानी आता हे कितना उपयोग होता है, कितना वेस्ट हो जाता है। इसकी गणना करने पर यह ज्ञात किया जायेगा कि प्रतिदिन न्यनूतम कितने लिटर पानी की आवश्यकता होती है एवं पानी का बचाव कर मरूस्थलीय क्षैत्र पे जल संरक्षण के उपाय विकसित किये जायेगें।

ऊर्जा प्रबन्धन ग्रुप में उषा वर्मा, यश सिंह, जयकिशन सोंलकी, सौरव शुक्ला, उषा चारण, मिशिका सोंलकी ने डॉ. अक्षय जोशी व डॉ. उमा राठौड़ के नेतृत्व में कॉलेज में विभिन्न प्रकार के ऊर्जा स्त्रोत जैसे–बिजली, एलपीजी गैस, लकड़ी कोयला आदि के उपभोग पर आधारित 13 बिन्दुओं का प्रपत्र तैयार किया इसमें प्रतिदिन कक्षाओं में, प्रयोगशाला व ऑफिस में कितनी ऊर्जा की आवश्यकता है एवं इनसे से कितनी ऊर्जा रिन्यूएबल स्त्रोत से प्राप्त हो सकती है गणना कर ज्ञात की जायेगी जिससे ग्रीन एनर्जी का कॉलेज रोडमैप बनाया जा सकें।

वेस्ट मैनेजमेन्ट ग्रुप में सन्नी लांबा, गजेन्द्र नेहरा, देवेन्द्र सिंह हरसाना, शाखा पारीक, शशिकान्त प्रेमी, वेद प्रकाश पारीक, पवन नांगल ने डॉ. महेन्द्र थौरी व डॉ. मधु सुदन शर्मा के नेतृत्व में वेस्ट मैनेजमेन्ट के तीन आयामों सालिड वेस्ट, लिक्विड वेस्ट एवं गैसीय वैस्ट को ध्यान में रखकर कॉलेज की कैंटीन, गार्डन, खेल मैदान, कक्षा सेमिनार हाल, प्रयोगशाला, ऑफिस पार्किंग जैसे स्थल चिन्हित किए जाहां बायोवेस्टि ई–वेस्ट एवं हानिकारक वेस्ट को निकाल कर ग्रीन तकनीक से नष्ट या उपयोग करने के सुझाव बनाए जा रहे है।

फौना–फ्लोरा एवं बायोडायवर्सिटी ग्रुप में प्रियंका भारद्वाज, अनुष्का सिंह, मीनल खत्री, भारती मारू, ओजस्वी भटनागर, पुष्पा प्रजापत, कविता ने डॉ. प्रताप सिंह एवं डॉ. एस.एन. जाटोलिया के नेतृत्व पे कैम्पस में विभिन्न पादपों एवं जन्तुओं के श्रेणीवार आडिट की लिस्ट एवं क्रियाकलापों के अध्ययन हेतु 16 बिन्दुओं का प्रपत्र बनाया।

कार्बन फुटप्रिन्ट एवं कैमिकल ग्रुप में सुनीता पंवार, आमीषा छींपा, बाबूलाल गर्ग, कबीर, भावना पारीक, संकलन गोस्वामी, हेमन्त जांगीड़ ने डॉ. एस.के. वर्मा व डॉ. देवेश सहारण के नेतृत्व में कार्बन फुट प्रिन्ट एवं कार्बन क्रेडिट की गणना हेतु सूत्र तैयार करने का कार्य प्रारम्भ किया। इन सूत्रों के माध्यम से न केवल ऑक्सीजन, प्राणवायु वरन कार्बन डाईआक्साईड जैसी हरीली गैस के साथ साथ कैंपस ने प्रति सप्ताह अपने वाले वाहनों एवं पदचापों की संख्या के साथ साथ जेन्डर ऑडिट भी हो सकेगी।

सभी टीमें डॉ. एच.एस. भंडारी प्रभारी जी.सीआर.सी के सहयोग से कार्य कर रही है एवं कॉलेज की अन्तिम ग्रीन आडिट रिपोर्ट एक माह में बीआईआरसी को सौंप दी जायेगी।

कार्यशाला में डॉ. दिव्या जोशी, डा. संगीता शर्मा, डॉ. राजाराम, डॉ. उमा रठौड़, डॉ. एस.एन. जाटोलिया, डॉ. अभिलाषा सोनेल डा. एस के यादव, डा. एस के वर्मा, डॉ. मधुसूदन, डॉ. राजेन्द्र सिंह डॉ. प्रतिभा पायल, डॉ. राजकुमार ठठेरा एवं डॉ. महेन्द्र थोरी की सहभागिता रही। संचालन डॉ. एच.एस. भंडारी एवं धन्यवाद डॉ. डॉ. राजाराम द्वारा दिया गया।